जन्म व स्थानः–कबीर का जन्म [illegible] शुक्ल पूर्णिमा सन 1398 ई0 को उत्तर प्रदेश के काशी में हुआ। उनके पिता का [illegible] का नाम नीमा था। उनकी पत्नी का नाम लोई था। उनका एक पुत्र कमाल तथा एक पुत्री कमाली थी। उनकी मृत्यु सन 1518 ई0 में काशी के नजदीक मगहर में हुई।

सदगुरु कबीर की विचारधारा

सदगुरु कबीर की विचारधारा मानवतावादी रही उन्होंने अपनी वाणियों से ''जियो और जीने दो'' की भावना से एक मानवतावादी सोच को जनता के समक्ष रखा। उन्होंने स्वयं के आचरण द्वारा मनुष्य को अंधविश्वास, पाखंड, कर्मकांड, जातिवाद व अज्ञानता से मुक्ति पाने का आदर्श स्थापित किया। सत्य के मार्ग पर वे जीवन भर अडिग रहे। अपनी तार्किक वाणियों से सदगुरु कबीर इस अमानवीय प्रथा के किले को ध्वस्त करते रहे। समाज में समानता व बंधुता हो, सब को समान अवसर मिले, ऐसी समानता की भूमि तैयार करने का साहसिक कार्य सदगुरु कबीर ने किया।

सदगुरु कबीर का समकालीन समाज

सदगुरु कबीर के समय जातिवाद व ऊंच–नीच की भावना के साथ–साथ अमीर की गरीब पर, साहूकार की कर्जदार पर व पुरुष की नारी पर दासता समाज में विद्यमान थी। सवर्ण जातियों ने देश के समूचे मजदूरों, शिल्पकारों, कलाकारों एवं किसानों को महाजनों की धन शक्ति व क्षत्रियों की राज शक्ति ने सबसे निचले स्तर पर जीवन जीने को मजबूर कर दिया था। स्त्री व शूद्रों को मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया, इसके साथ ही जातिवाद, वर्णवाद व धर्म की रूढ़ मान्यताएं समाज पर लाद दी गई थीं। सदगुरु कबीर ने अपने समय की इन सभी दासताओं, जातिवादी दानवों तथा धर्म की रूढ़ मान्यताओं पर अपने तर्कसंगत विचारों से सीधी चोट की। वे पीर औलिया, पंडित, पुजारी, सुल्तान किसी से नहीं डरे। कबीर साहेब मानो सौ शेरों का कलेजा लेकर पैदा हुए थे।

सदगुरु कबीर का मानवतावादी दर्शन

सदगुरु कबीर का सम्पूर्ण जीवन मानवतावादी दर्शन का निर्माण करता है। सदगुरु कबीर का समाज इंसानियत का समाज है। मानव–मानव से प्रेम करें, ऊँच नीच का भेद न हो, ऐसा समाज वे चाहते थे। उन्होंने अपने मानवतावादी दर्शन में ऊँचे कुल में जन्म लेने वालों को मान्यता नहीं दी अपितु ऊँची करनी को मान्यता दी। उनका स्पष्ट संदेश था :–

ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होय।
सुबरन कलश सुरा भरा, साधु निंदा सोए।।

कबीर साहेब ऐसी वर्णवादी व्यवस्था, जो एक को श्रेष्ठ दूसरे को नीच कहे, उसके घोर विरोधी थे। वे ब्राह्मण व शुद्र दोनों को एक ही मानवतावादी तराजू पर तोलना चाहते थे। इस वर्णवादी व्यवस्था पर सीधी चोट करते हुए उन्होंने कहा है:–

एकै बूँद एकै ही मलमूतर, एकै चाम एकै गूदा।
एकै ज्योति से सब उपजा, कौन बामन कौन सुदा।।

हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे [illegible]। तुम कैसे [illegible]न पांडे हम कैसे सूद।।

ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न बता[illegible] सिद्ध करने वालों पर सदगुरु कबीर की वाणी व्यंग्यात्मक प्रहार करती है:–

जो तू बामन बामणी का जाया, और राह से काहे न आया।
जो तू तुर्क तुर्कनी का जाया, पेटहि काहे न खतना कराया।

सदगुरू कबीर का सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार

न्याय, समानता, स्वतंत्रता, बंधुता मानवतावाद के मूल मंत्र है। मानवतावाद एक ऐसा विशाल परिवार होता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार काम देने तथा उसकी आवश्यकता अनुसार भोजन, कपडा, मकान, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि देने की दृढ़ प्रतिज्ञा व संकल्पना उसमें निहित होती है।

इसके विपरीत पौराणिक दर्शन–परमात्मा, जगत जीव, स्वर्ग नरक, कर्म फल का भय दिखाकर अपने को श्रेष्ठ बताकर शूद्र को पशुवत रखकर उसे अपमानित व शोषित करने की जो रीति है वह मानवता के प्रति घोर अपराध का प्रमाण है। इसी अमानवीय दर्शन के कारण अनेक सामाजिक कुरीतियाँ–धार्मिक पाखंडवाद, अंधविश्वास, जातिवाद, छुआछूत, ऊँच–नीच व कर्मकांड आदि अनेक विषमताएँ समाज में पनपी। इन विषम, अगतिशील भावनाओं के कारण एक विशाल जन समुदाय को वर्ण व जाति का आधार बनाकर धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व आर्थिक दृष्टि से सभी अधिकारों से वंचित कर दिया गया। संत कबीर ने अपने समय के इन पुरोहितों व सामंतो को खुश करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उस वंचित समूह की मुक्ति का पक्ष लेकर उस समय की सामाजिक विषमता पर करारी चोट की। आज भी कुछ लोगों के पास बहुत धन दौलत है जबकि अन्य अभाव का जीवन जी रहे हैं। सदगुरु कबीर की वाणी उस सामंतवादी युग में भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है। ऐसी विषमता पर गहरी चोट करते हुए वे कहते हैं:–

आसा जीवै जग मरे, लोग मरे मरि जाइ।धन संचै ते भी मरें उबरै सो धन खाई।।

सदगुरु कबीर इस विषमता का कारण अधिक धन संचय को मानते हैं। अधिक धन संग्रह शोषण का प्रतीक है। उन्होंने अपने शिष्य धर्मदास का भी धन गरीबों में वितरित करवा दिया। जीवन की आवश्यकता अनुसार वस्त्र और अन्न ग्रहण करने की आज्ञा उन्होंने दी है:–

उदर समाता अन्न लें, तन समाता चीर। अधिक संग्रह न करें, ताका नाम फकीर।।

इस आर्थिक संतुलन पर कबीर ने कहा है:––

साँई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय। मैं भी भूख ना रहूं, साधु ना भूखा जाय।।

कबीर साहेब ने शोषक और शोषित का, धनवान और गरीब का, सामंत और कृषक का, सत्य और झूठ का भेद मिटा देने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया।

सत ही में सत बांटई, रोटी में ते टूक। कहें कबीर ता दास को कबहूँ न आवे चूक।।

जो जल बाढ़े नाव में घर में बाढ़े [illegible]ए यही सयानों काम।।

सदगुरु कबीर अत्यधिक धन संग्रह को जहां [illegible]षण का प्रतीक मानते थे वहीं निर्धनता को बहुत बड़ा अभिशाप मानते थे। कबीर साहेब इस पर कहते हैं:––

निर्धन आदर कोई न देई। लाख जतन करै, ओहु चित न धरेई।।

पाखंड व आडंबर पर चोट

भारत की लोक चेतना मानव को देवता बनाने की मानो ठेकेदार हो। वर्णवाद, जातिवाद, अस्पृश्यवाद को कोई भी समाज सुधारक यदि चुनौती देता है तो इस व्यवस्था के पोषक लोग उसके खिलाफ षड़यंत्र रचते हैं, या उसे देवत्व ग्रहण करवा कर लोगों को उसके समक्ष नतमस्तक करवा देते हैं। देवत्व के बाद फिर उसकी मंदिर संस्कृति खड़ी कर दी जाती है और फिर उस मंदिर में करोड़ों लोगों का आगमन होता है। फिर ऐसी संस्कृति से समाज में फैलता है आडंबर और पाखंडवाद। उन महापुरुषों के वचनों को भूलकर हम एक दिन ही उनकी जयंती मनाकर उनके समक्ष नतमस्तक होकर व उनके विचारों को विस्मृत कर घर बैठ जाते हैं और पाखंड व आडंबर के घोर जंजाल में फंस जाते हैं। नतमस्तक होने की यह धर्मांधता इतनी भयानक हो जाती है कि हम मंदिर मस्जिद में बंटकर एक दूसरे के कट्टर विरोधी हो जाते हैं। सदगुरु कबीर ने ऐसी कट्टरता व विभिन्न संप्रदायों की धार्मिक रूढ़ियों पर गहरी चोट की है:–

मोको कहां ढूंढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद ना काबे कैलास में।।
जटा बाँधि बाँधि योगी मुए, इनमें किनहूँ न पाई।
मूड मुंडाये जो सीधी होई, स्वर्ग न पहुंचे भेड़ कोई।
पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते तो चाखी भली, पीस खाय संसार।।

प्रथा के नाम पर शूद्रों के प्राण लेने वाले व पत्थरों में जान फूँकने वाले पुरोहितों पर भी सदगुरु कबीर ने सीधी चोट की:––

करें प्रतिष्ठा वेद मंत्र से तामे प्राण बुलावै।
जो वह मंत्र सत्य करि जाने, निज पितु क्यों न जिवावै।।

सत्य का मार्ग

तथागत बुद्ध व महावीर स्वामी की तरह सदगुरु कबीर ने भी सभी प्रकार की रूढ़ मान्यताओं को ठेंगा दिखाकर सत्य का ही मार्ग चुना। सत्य के लिए कबीर साहेब ने अपनी बुद्धि धर्म के नाम पर गिरवी नहीं रखी अपितु धर्म व पाखंड के नाम पर बेहोश हुए समाज को होश में लाने की उन्होंने नसीहत दी। उनकी सत्य पूर्ण वाणी धर्म की तरह कोई नशीली वस्तु नहीं थी अपितु प्राणीमात्र के कल्याण की दवा थी। उनकी वाणी सत्य की पराकाष्ठा पर खरी उतरने वाली थी। उनके लिए सत्य केवल सत्य था।

उन्होंने अपनी वाणी में कह[illegible]:–

साँच बराबर तप नहीं झूठ ब[illegible]के हिरदे सांच है. ताके हिरदे आप।।

कहै कबीर सुनो हो साधो अमृत वचन हमार। जो भला चाहे आपनों परखो करो विचार।।

वेद शास्त्रों के पांडित्य के घमंड में अपने को श्रेष्ठ बतलाने वाले पाखंडियों पर सदगुरु कबीर ने सीधी चोट की है:–

पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडित होय।।

सदगुरु कबीर ऐसे शास्त्रों की पोथियों पर विश्वास न करके आँखों देखी पर विश्वास करते थे।

तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी।

सत्य को असत्य से हराने वाले असत्यमार्गी ठेकेदारों पर भी कबीर साहेब ने व्यंग्यात्मक प्रहार किया:––

साँच कहूं तो मारन धावे, झूठे जग पतियाई। ये जग काली कूकरी, जो छेड़े तो खाई।।

सदगुरु कबीर को यह भलीभांति आभास था कि सत्य कहने पर पाखंडी धर्मावलंबी उन्हें मारने दोड़ेंगे, लेकिन कबीर डरे नहीं, उन्होंने अपनी सत्य पूर्ण वाणियों से पंडितों व मुल्लाओं दोनों को फटकारा। उन्होंने सत्य के लिए खुद मशाल हाथ में लेकर अपना घर जलाकर लोगों के घरों को रोशन किया, जो युगों युगों तक घरों में प्रकाश देता रहेगा।

कबीरा खड़ा बाजार में लिये लकुठी हाथ। जो घर फूंके आपना चले हमारे साथ।।

सदगुरु कबीर ने जिस सत्य के मार्ग को चुना, वह तलवार की धार पर चलने के समान कठिन भले ही था लेकिन उन्होंने समानता के सिद्धांत के लिए सत्य के रस का आनंद लिया तथा शोषित समाज को इसी मार्ग पर चलने को कहा।

मानवतावादी कुछ अन्य दोहों की सार्थकता, अहंकार पर प्रहार

तिनका कबहुँ ना निंदिये, जो पांव तले होय। कबहुँ उड़ आँखों पड़े, पीर घनेरी होय।।

आय हैं सो जाएंगे, राजा रंक फकीर। एक सिंहासन चढ़ि चलै, एक बंधै जंजीर।।

कबीरा गर्व ना कीजिए, ऊँचा देख आवास। काल परौ भूई लेटना, ऊपर जमसी घास।।

दूसरों की बुराई देखने से पहले अपनी बुराइयों को दूर करने की नसीहत भी कबीर साहेब ने दी है:–

बुरा जो देखन में चल्या, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।
दर्शन करना है तो, दर्पण माँजत रहिये।
दर्पण में लगी काई, तो दर्श कहाँ से पाई।।

वाणी की मितव्ययिता पर सदगुरु कबीर के दोहे

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोइ। औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होई।।

बोली एक अनमोल है जो कोई बोलै जानि। हिये तराजू तोल के, तब मुख बाहर आनि।।

सदगुरु कबीर की समय पर कार्य करने की नसीहत है

काल करो सो आज कर, आ[illegible]रे सो अब। [illegible] में प्रलय होएगी बहुरि करेगा कब।।

संघर्षशील व्यक्ति को कई [illegible]णाम मिलते हैं, उसको निराश होने की जरूरत नहीं है, उसको भी सदगुरु कबीर ने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने को कहा है।

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय। माली सींचे सो घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

श्रम ही ते सब होत है, जो मन राखै धीर। श्रम ते खोदत कूप ज्यूँ, थल में प्रगटै नीर।।

इस प्रकार सदगुरु कबीर ने मनुष्य के जीवन का ऐसा कोई भी पहलू अछूता नहीं छोड़ा जिस पर उनके दोहे प्रासंगिक न हो। तेरहवीं शताब्दी से लेकर आज तक उनकी वाणी लोगों के जीवन को हर पल संदेश दे रही है। ऐसे न्यायप्रिय, समानतावादी, सत्यवादी प्राणिमात्र के हितकर सदगुरु की वाणी आज समाज के लिए बहुत उपयोगी बन गई है।

उनको आज मंदिरों में नहीं दिलों में रखने की जरूरत है। उनकी वाणी समाज के टूटते हुए अवयवों को जोड़ने की आशावादी दृष्टि है। उन्होंने जिस समतामूलक समाज की नींव डाली थी उसके विचारों को गुरू नानकदेव, संत दादू, संत रैदास, आदि ने भी स्थान देकर समतामूलक समाज का आदर्श स्थापित किया। लेकिन सदगुरु कबीर की जो जंग थी वह आज भी जारी है क्योंकि समाज में आज भी सामाजिक व आर्थिक विषमता विद्यमान है।

उनकी वाणी आज भी इस विषमता पर प्रहार कर रही है। तथागत बुद्ध ने जो उपदेश मानवता, समानता व बंधुता के लिए दिये थे उन्ही उपदेशों को सदगुरु कबीर ने अपनी वाणियों में प्रकट किया। उन्होंने अपनी अक्खड़ भाषा में लोगों को समझाया तथा मानवता, समानता व बंधुता का संदेश दिया।

बाबा साहब अंबेडकर ने मानवतावादी, लोकतांत्रिक मूल्यों के जिन आदर्शों का संविधान में उल्लेख किया है उसमें तथागत बुद्ध व सदगुरु कबीर की ही वाणी निहित है। महामानव बाबा साहब ने तथागत बुद्ध व सदगुरु कबीर की मानवता, समता व बंधुता की विचारधारा को ही आगे बढ़ाया है। आज भी तथागत बुद्ध, सदगुरु कबीर व महामानव बाबा साहब के विचार व उनका संघर्ष मानवमात्र को प्रेरणा दे रहे हैं। उनके विचार मानवता के पोषक व आज भी प्रासंगिक हैं। उनके विचारों को अपनाकर ही हम मानवता को संरक्षित व सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

नमो बुद्धाय
भवतु सब्ब मंगलम

अत्त दीपो भव

SOCIAL ACTION GROUPS FOR AMBEDKARITE REFORM (SAGAR)
Office : 106, Sector-21B, Faridabad, Haryana

Printed By : Mansi Digital Graphic, Ballabgarh, Faridabad, Haryana

सदगुरु कबीर और उनके विचार

जन्म	:	1398 ई. ज्येष्ठ पूर्णिमा
जन्म स्थान	:	काशी (उत्तर प्रदेश)
प्रमुख रचनाएँ	:	बीजक–साखी, सबद और रमैनी
देहान्त	:	1518 ई. (मगहर)